fnukd 16 eb] 2016 dk vk;Hkê lHkkxkj] ekjgkcknh] jkph e ikr% 11-00 ct lLdr foHkkx] jkph fo'ofo|ky; }kjk ^^f'kYiofoè;e 'kkL=e vuç;kx'p** fo"k; ij vk;kftr f=&fnolh; vUrjjk"Vh; 'kkèk lxk"Bh dk lekiu lekjkg e ekuuh;k jkT;iky egkn;k dk mnckèku

मुझे संस्कृत विभाग, राँची विष्वविद्यालय द्वारा आयोजित इस त्रि—दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय 'kk/k संगोष्ठी के समापन समारोह में आप सभी के मध्य सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है।

संस्कृत fo'o की सबसे पुरानी उल्लिखित Hkk"kk है। इसे देवभाषा, देववाणी भी कहा गया है। यह ऋषि—मुनियों की भाषा रही है, जो ज्ञान के अहम केन्द्र रहे हैं। वैसे भी भारत को ऋषि—मुनियों की भूमि कहा गया है, जिन्होंने अपने ज्ञान एवं बुद्धि से सम्पूर्ण fo'o को आलोकित एवं ekxn'kZu प्रदान करने का कार्य किया। संस्कृत वेद की भाषा है। इसलिए इसे विष्व की प्रथम भाषा मानने में कहीं किसी को

l’k; की संभावना नहीं है। यह vf/kdka’k भारतीय भाषाओं की जननी है। यह भारत को एकसूत्र में बाँधने में सहायक है। कई धर्मों के प्राचीन ग्रंथ संस्कृत में है। पूजा—पाठ और धार्मिक संस्कार की भाषा संस्कृत है। इसका साहित्य अत्यन्त प्राचीन, fo’kky और विविधतापूर्ण है। इसमें अध्यात्म, n’ku, ज्ञान—विज्ञान और साहित्य का भंडार है। इसके अध्ययन से ज्ञान—विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति को बढ़ावा मिलेगा।

संस्कृत विभाग द्वारा f’kYi&ofo/;e पर संगोष्ठी का आयोजन किया जाना सराहनीय है। समाज के लिए ‘शिल्प’ एक ऐसा विषय है जो सदा—सर्वदा प्रासंगिक बना हुआ है। हम आज जिस काम में प्रवृत्त होते हैं, उसमें कहीं न कहीं शिल्प की आवश्यकता होती ही है। हमारे वैदिक ऋषियों ने भी इस तत्त्व के महत्त्व को जाना है और स्थान—स्थान पर विविध प्रकार के शिल्पों का उल्लेख मिलता है। साहित्य में भी शिल्पों और शिल्पकारों का वर्णन मिलता है।

कोणार्क मन्दिर के बारे में आपने सुना होगा, देखा भी होगा। f'kYidkj धर्मपद तथा उनके पिता fo'k महाराणा के बारे में भी आपने जरूर पढ़ा होगा। इनके कार्य में f'kYi की दक्षता सुनने मात्र से ही झलकती है।

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी होता है, उसके जीवन में ललित कलाओं की भी आवश्यकता होती है। इन्हीं कलाओं में नृत्य,गीत आदि के साथ–साथ काव्यकला भी है। भर्तृहरि ने कहा है कि जो मनुष्य साहित्य, संगीत और कलाओं से रहित होता है, वह सींग और पूंछ–रहित पशु की तरह है–

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।

किसी भी राष्ट्र के fodkl में शिल्पों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। वे शिल्पकार ही होते हैं जो किसी भी देश की आर्थिक स्थिति को सबल बनाते हैं। आज हमारे सामने अनेक देश प्रमाण के रूप में विद्यमान हैं जिनके शिल्पकार हर तरह की छोटी–से–छोटी और बड़ी–से–बड़ी

वस्तुओं तक का निर्माण कर पूरे fo'o में अपने देश की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाये हुए हैं।

केन्द्र सरकार ने इस ओर विशेष रूप से ध्यान देते हुए कौशल विकास की अनेकानेक योजनाओं के माध्यम से शिल्पों के विकास के लिए शिल्पकारों को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है। हमारी योजनायें ऐसी हैं जो विविध प्रकार के शिल्पकारों को आर्थिक सहायता देकर उनके शिल्पों को बढ़ाने का काम कर रही है। मेक इन इण्डिया से लेकर स्टार्ट अप इण्डिया और स्टैण्ड अप इण्डिया आदि सारी योजनाएं किसी न किसी रूप में शिल्पों के विकास को ही तो प्रोत्साहित करने वाली हैं।

शिल्पों के वैविध्य पर, उनका काव्यों में प्रयोग पर जो यह संगोष्ठी आयोजित हुई है, वह निश्चित रूप से देश में और समाज में न केवल शिल्पों की ओर आकर्षित तथा प्रेरित करेगी, बल्कि संस्कृत का ज्ञान हासिल करने के

लिए भी प्रेरित करेगा। वेदों से लेकर बाद तक के संस्कृत साहित्य में रत्न भरे पड़े हैं, उनको खोजना आवश्यक है। नासा जैसी संस्था भी स्वीकार कर रही है कि जब छठे और सातवें जेनरेशन का कम्प्यूटर आएगा तब उसके लिए संस्कृत भाषा ही सबसे उपयोगी होगी। इस संगोष्ठी में अपने देश के विविध भागों से और कुछ अन्य देशों के भी जो विद्वान् और शोधकर्ता आए हैं, आशा है कि उनके विद्वत्तापूर्ण लेखों और विचारों के द्वारा प्रस्तुत तथ्य देश और समाज की उन्नति में सहायक होंगे।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!